

पर्वत प्रदेश में यावस

शुभिनानंदन पंत

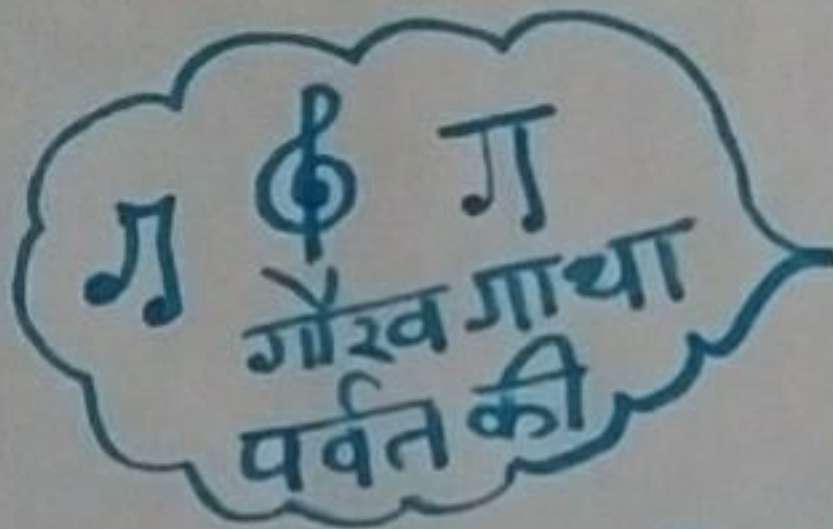
वर्षा ऋतु है



पर्वत पर खिले फूल उसकी आँखों के समान हैं।

पर्वत का प्रतिबिंब

दर्पण समान तालाब



झरने

नक्षत्र

जंभ

ऊँची

महत्वकांक्ष

मोती जैसे सुंदर

बादलों के कारण मानो शाल के पेड़ धरती से धुस जाते।

मानो... पर्वत उड़ चला

पंख समान बादल

केवल झरनों के स्वर रहे गाए

ग
ग
ग

धुआँ उठा

तालाब पर

तालाब मानो जल रहा हो